एवं णामस्स सव्वधुवबंधिपयडीणं पि अवट्ठाणपरूवणा कायव्वा। अण्णेण उवएसेण पुण सव्वणामपयडीणं णत्थि अवट्ठिदसंकमो। कुदो? जसकित्ति-अजसकित्तीणमागम-णिग्गमविसमदाए। तं जहा -- जसकित्तीए तुल्लसंतकम्मे णिग्गमादो णिग्गमो तुल्लो वा विसेसुत्तरो वा। आगमो पुण णिग्गमादो संखे० गुणो। अजसकित्तीए वि तुल्लसंतकम्मे णिग्गमादो तुल्लो वा असंखेज्जदिभागुत्तरो वा। आगमो पुण णिग्गमादो असंखे० भागुत्तरो। तदो धुवबंधीणं णामपयडीणं जदा जसकित्ती बज्झदि तदा आगमो थोवो, णिग्गमो बहुओ। जदा जसकित्ती ण बज्झदि तदा णिग्गमो थोवो, आगमो बहुओ। एदेण कारणेण णामस्स पयडीणं णत्थि अवट्ठाणं एदेणेव हेदुणा पुरिसवेद-भय-दुगुंछाणं पि अवट्ठाणाभावो परूवेयव्वो। एदेहि दोहि उवदेसेहि भुजगार-पदणिक्खेव- वड्ढिसंकमेसु सामित्तमप्पाबहुगं कायव्वं।

इसी प्रकार नामकर्मकी सब ध्रुवबंधी प्रकृतियोंके भी अवस्थानकी प्ररूपणा करना चाहिये। परन्तु अन्य उपदेशके अनुसार सब नाम प्रकृतियोंका अवस्थितसंक्रम नहीं होता। इसका कारण यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आने व जानेवाले द्रव्यकी विशेषता है। वह इस प्रकारसे --यशकीर्तिके समान सत्कर्ममें निर्गमकी अपेक्षा निर्गम तुल्य अथवा विशेष अधिक होता है। परन्तु आगमन निर्गमनकी अपेक्षा संख्यातगुणा होता है। अयशकीर्तिके भी समान सत्कर्ममें निर्गमसे निर्गम समान अथवा असंख्यातवें भागसे अधिक होता है। परन्तु आगम निर्गमकी अपेक्षा असंख्यातवें भागसे अधिक होता है। इस कारण ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंका जब यशकीर्ति बँधती है तब आगम स्तोक और निर्गम बहुत होता है। तथा जब यशकीर्ति नहीं बँधती है तब निर्गम स्तोक और आगम बहुत होता है। इस कारण नामप्रकृतियोंका

अवस्थान नहीं है। इसी हेतुसे पुरुषवेद, भय और जुगुप्साके भी अवस्थानके अभावकी प्ररूपणा करनी चाहिये। इन दो उपदेशोंके अनुसार भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिसंक्रममें स्वामित्व व अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

णिरयगइणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो सव्वसंकमेण चरिमफालिं संकामेंतओ तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो पढमवारं चेव उवसमसेडिमारूढो चरिमसमयसुहुमसांपराइयो संतो मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी। अवट्ठाणं णत्थि। तिरिक्खगदिणामाए णिरयगइभंगो। मणुसगइणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो गुणिदकम्मंसियो तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेदूण सव्वणिरुद्धकाले सेसे मिच्छत्तं गदो, तदो उवट्टियस्स (अ-का प्रत्योः 'उवट्ठियस्स', ता प्रतौ 'उवट्ठियस्स' इति पाठः।) पढमसमयतिरिक्खस्स उक्कस्सिया पदेससंकमवड्ढी। मणुसगइणामाए उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो णेरइयो गुणिदकम्मंसियो तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेयूण सव्वणिरुद्धकाले सेसे मिच्छत्तं गदो तस्स पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स उक्क० हाणी। अवट्ठाणं णत्थि।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक प्रथम वार ही उपशम श्रेणिपर आरूढ होकर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता हुआ मरणको प्राप्त होकर देव हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान उसका नहीं है। तिर्यग्गति

नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो सातवीं पृथिवीका गुणिककर्मांशिक नारकी तैंतीस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सर्वनिरुद्ध कालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् वहाँसे निकलकर जो तिर्यंच हुआ है उस प्रथम समयवर्ती तिर्यंचके उसकी उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमवृद्धि होती है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो नारकी गुणितकर्मांशिक तैंतीस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सर्वनिरुद्ध कालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान उसका नहीं है।

मणुसगइणामाए सत्तमपुढविणेरइयसम्माइट्ठीहि तेत्तीसं सागरोवमाणि णिरंतरं बद्धाए किमिदि णावट्ठाणं। जेसिमाइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो तेसिमहिप्पाएण अत्थि अवट्ठिदसंकमो। जेसिं पुण आइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो ण होदि, किंतु संकामिज्जमाणपयडिपदेसाणुसारी, तेसिमहिप्पाएण सव्वणामपयडीणं णत्थि अवट्ठाणं।

शंका -- सातवीं पृथिवीके नारकी सम्यग्दृष्टियोंके द्वारा तैंतीस सागरोपम काल तक निरन्तर मनुष्यगतिके बाँधे जानेपर उसका अवस्थान क्यों नहीं होता?

समाधान -- जिन आचार्योंके मतमें निर्गमके समान आगम होता है उनके अभिप्रायके अनुसार उसका अवस्थितसंक्रम होता है। परन्तु जिन आचार्योंके मतमें निर्गमके अनुसार आगम नहीं

होता, किन्तु संक्रान्त की जानेवाली प्रकृतियोंके प्रदेशके अनुसार आगम होता है; उनके अभिप्रायके अनुसार सब नामप्रकृतियोंका अवस्थानसंक्रम नहीं होता।

देवगइणामाए (उक्करिस्सया) वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो असंखेज्जवस्साउएसु पूरेदूण दसवस्ससहस्सिएसु देवेसु उववण्णो, तदो चुदो (ता प्रतौ 'तदो (उ) चुदो' इति पाठः।) तिरिक्खेसु मणुस्सेसु उववण्णो, तस्स तेसिं पढमसमए वट्टमाणस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो असंखेज्जवस्साउएसु पूरेदूण मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स देवगदिणामाए उक्क० हाणी। जेण उवदेसेण अवट्ठाणं तेण उवदेसेण तिपलिदोवमियस्स तप्पाओग्गउक्करिस्सयाए वड्ढीए वड्ढिदूण अवट्ठिदस्स उक्करस्समवट्ठाणं। मणुसगइणामाए वि णिरयगदीए तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेयूण तत्थ तप्पाओग्गउक्करिस्सयाए वड्ढीए वड्ढिदूण अवट्ठिदस्स उक्करस्समवट्ठाणं। एवं तिरिक्खगदीए सत्तमपुढविणेरइएसु तिरिक्खगदिं चेव णिरंतरं बंधमाणेसु अवट्ठाणं वत्तव्वं।

देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यात वर्षायुष्कोंमें उसको परिपूर्ण करके दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है और फिर वहाँसे च्युत होकर तिर्यंचों व मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है उसके उक्त भवोंके प्रथम समयमें वर्तमान होनेपर उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यातवर्षायुष्कोंमें उसे पूर्ण कर (बाँधकर) मरणको प्राप्त हो देव उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि होती है।

जिस उपदेशके अनुसार अवस्थान होता है उस उपदेशके अनुसार तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत होकर अवस्थानको प्राप्त हुए तीन पल्योपम आयुवाले जीवके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। नरकगतिमें तैंतीस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वको पालकर और वहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत होकर अवस्थानको प्राप्त हुए जीवके मनुष्यगति नामकर्मका भी उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकार तिर्यंचगतिको ही निरन्तर बाँधनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें तिर्यंचगति नामकर्मके उत्कृष्ट अवस्थानका कथन करना चाहिये।

ओरालियसरीरणामाए उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो उव्वट्टिदो (अ-का प्रत्योः 'उवट्टिदो', ता प्रतौ 'अवट्टिदो' इति पाठः।) सण्णिमिच्छाइट्ठीसु उववण्णो, सव्वलहुं सम्मत्ते लद्धे विज्झादसंकमो जादो, तस्स पढमसमयसम्माइट्ठिस्स उक्कस्सिया हाणी। सो चेव जहण्णियाए सम्मत्तद्धाए अंतो देवलोगं गच्छेज्ज, देवलोगं गदस्स ओरालियसरीरस्स अधापवत्तसंकमो जादो, तस्स सव्वरहस्सेण खआळएण देवलोगं गदस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० वड्ढी। अवट्ठाणं जहा मणुसगदीए कदं तहा कायव्वं। वेउव्वियसरीरस्स देवगइभंगो। आहारसरीरणामाए उक्क० वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो आहारसरीरं सव्वचिरं पूरेदूण (अ प्रतौ 'पूणेदूण' इति पाठः।) चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण खवेमाणस्स (ता प्रतौ 'खवेमाणस्स (खवेमाणओ तस्स' इति पाठः।) परभवियबंधोवोच्छेदेण आवलियं गंतूण उक्कस्सिया वड्ढी। तस्स चेव से काले उक्क० हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि। एवसद्देण उवदेसा वि पडिसिद्धा। तेजा-कम्मइयाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण खवेमाणओ,

तस्स परभवियणामाणं बंधवोच्छेदादो (अ-का प्रत्योः 'बंधवोच्छेदो', ता प्रतौ 'बंधवोच्छे (दा-)दो' इति पाठः।) आवलियं गदस्स उक्क० वड्ढी। तस्सेव से काले उक्क० हाणी। अवट्ठाणं (ता प्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम्।) उवदेसेण जहा मणुसगइणामाए कदं (ता प्रतौ 'कथं (दं)' इति पाठः।) तहा कायव्वं।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे निकलकर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसके सर्वलघु कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त कर लेनेपर विध्यातसंक्रम हुआ उस प्रथम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। वहीं जघन्य सम्यक्त्वकालके भीतर देवलोकको प्राप्त होता है, देवलोकको प्राप्त होनेपर उसके औदारिकशरीरका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, सर्वलघु कालमें देवलोकमें प्राप्त हुए उस प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। अवस्थानका कथन जैसे मनुष्यगतिके सम्बन्धमें किया है वैसे यहाँ भी करना चाहिये। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक सबसे दीर्घ कालमें आहारकशरीरको पूर्ण कर चार वार कषायोंको उपशमा कर क्षपणामें उद्यत है उसके परभविक नामप्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्तिसे आवली मात्र काल जाकर आहारकशरीरकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान नहीं है। 'एव' शब्दसे यहाँ उपदेशोंका भी प्रतिषेध किया गया है। तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक चार वार कषायोंको उपशमा कर क्षपणामें उद्यत है उसके परभविक नामप्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्तिके पश्चात् आवली

मात्र कालके बीतनेपर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थानकी प्ररूपणा उपदेशके आश्रयसे मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये।

पढमसंठाण-पढमसंघडणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो बे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेयूण कसाए चदुक्खुत्तो उवसामेदूण तदो खवेंतस्स (ता प्रतौ 'खवेंतस्स (खवेंतओ तस्स)' इति पाठः।) बंधवोच्छेदादो आवलियं गदस्स उक्क० वड्ढी। तस्सेव से काले उक्कस्सिया हाणी। अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायव्वं। पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो कसाए अणुवसामेदूण सव्वलहुं खवेंतओ तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो उवसमसेडिमारुहिय चरिमसमयसुहुमसांपराइयो होदूण मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्कस्सिया हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि। जहा तेजा-कम्मइयसरीराणं उक्कस्सवड्ढी-हाणीयो कदाओ तहा (ता प्रतौ 'तहा' इत्येतत्पदं नास्ति।) सव्वासिं सत्थाणं धुवबंधीणं कायव्वं। अप्पसत्थाणं धुवबंधीणं णामपयडीणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो कसाए अणुवसामेदूण सव्वलहुं खवेदि तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो पढमवारं चेव कसाए उवसामेदि सो चरिमसमयसुहुमसांपराइयो होदूण मदो जादो तस्स (अ-का प्रत्योः 'सांपराइयो जादो तस्स', ता प्रतौ 'सांपराइयो जादो (मदो) तस्स' इति पाठः।) पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी। अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायव्वं।

प्रथम संस्थान और प्रथम संहननकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर व चार वार कषायोंको उपशमा कर क्षपणामें तत्पर है उसके बन्धव्युच्छित्तिसे आवली मात्र कालके बीतनेपर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिए। शेष पाँच संस्थानों और पाँच संहननोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक कषायोंको न उपशमाकर सर्वलघु कालमें क्षपणा करता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक उपशमश्रेणिपर आरूढ होता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होकर मरणको प्राप्त देव हो जाता है उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान नहीं है। जिस प्रकारसे तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानिको किया है उसी प्रकारसे सब प्रशस्त ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंकी भी वृद्धि और हानिको करना चाहिये। अप्रशस्त ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक कषायोंको न उपशमा कर सर्वलघु कालमें उनका क्षय करता है उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक प्रथम वार ही कषायोंको उपशमाता है वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होकर मरणको प्राप्त हो जब देव होता है तब उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थानका कथन मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये।

चदुण्णमाणुपुव्वीणामाणं वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सग-सगगइभंगो। अप्पसत्थाणमद्धुवबंधिणामपयडीणं अप्पसत्थधुवबंधिणामपयडिभंगो। णवरि अवट्ठाणं णत्थि। परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभगादेज्ज-सुस्सराणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो बे-छावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालेदूण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण तदो खवेंतस्स (ता प्रतौ 'खवेंतस्स (खवेंतओ तस्स)' इति पाठः) परभवियणामाणं बंधवोच्छेदादो आवलियं गदस्स उक्कस्सिया वड्ढी। तस्सेव से काले उक्क० हाणी। अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायव्वं। आदावुज्जोवणामाणं उक्क० वड्ढी सव्वसंकमे दादव्वा। उक्क० हाणी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो पढमदाए (कसाए) उवसामेदूण चरिमसमयसुहुमसांपराइयो संतो मदो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि। अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुभ-अजसकित्तीणं उक्क० वड्ढी हाणी वा जहा अप्पसत्थाणं संठाणाणं कदा तहा कायव्वा। थिर-जसकित्ति-सुभाणं एदासिं तिण्णं णामपयडीणं उक्क० वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण तदो खवेदि तस्स खवेमाणस्स परभवियणामाणं बंधादो (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ता प्रतिषु 'बंधवोच्छेदाभावादो' इति पाठः।) आवलियमदिक्कंतस्स उक्क० वड्ढी। तस्सेव से काले उक्क० हाणी। णवरि जसकित्तीए परभविबंधवोच्छेदचरिमसमए उक्क० वड्ढी। चउत्थीए उवसामणाए मदचरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स देवेसुप्पज्जिय समयाहियावलियादिक्कंतस्स उक्कस्सिया (अ-का प्रत्योः 'समयाहियावलियादिउक्कस्सउक्कस्सिया', ता प्रतौ 'समयाहियावलियाहि (उक्कस्स) उक्कस्सिया' इति पाठः।) हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि।

चार आनुपूर्वी नामप्रकृतियोंकी वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा अपनी अपनी गतिके समान है। अप्रशस्त अध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा अप्रशस्त ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंके समान है। विशेषता इतनी है कि उनका अवस्थान नहीं है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुस्वर; इनकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर व चार वार कषायोंको उपशमा कर पश्चात् क्षपणामें प्रवृत्त होता है तब उसके परभविक नामकर्मोंकी बन्धव्युच्छित्तिसे आवली मात्र काल जाकर उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसके ही अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये। आतप और उद्योत नामकर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धिको सर्वसंक्रममें देना चाहिये। इनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक प्रथमतः कषायोंको उपशमा कर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता हुआ मरणको प्राप्त हो (देव होता है उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान है ही नहीं। अप्रशस्त विहायोगति अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति इनकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानिकी प्ररूपणा जैसे अप्रशस्त संस्थानोंकी की गई है वैसे करना चाहिये। स्थिर, यशकीर्ति और शुभ इन तीन नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है। जो गुणितकर्मांशिक चार वार कषायोंको उपशमा कर तत्पश्चात् क्षपणा करता है उस क्षपणा करनेवालेके परभविक नामकर्मोंके बन्धसे आवली मात्र काल जाकर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। विशेष इतना है कि यशकीर्तिकी उत्कृष्ट वृद्धि परभविक नामप्रकृतियोंके बन्धव्युच्छेदके अन्तिम समयमें होती है। चतुर्थ उपशामनामें मरणको प्राप्त हुए अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके देवोंमें उत्पन्न

होकर एक समय अधिक आवली मात्र कालके बीतने पर उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान है ही नहीं।

णीचागोदस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स खवयस्स। उक्क० हाणी कस्स? उवसामओ चरिमसमयसुहुमसांपराइयो मदो संतो जो देवो जादो तस्स पढमसमए उक्क० हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि। उच्चागोदस्स वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं मणुसगइभंगो। एवमुक्कस्ससामित्तं समत्तं।

नीचगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक मरणको प्राप्त होकर देव होता है उसके प्रथम समयमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवस्थान है ही नहीं। उच्चगोत्रकी वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

मदिआवरणस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स? जो जहण्णएण संतकम्मेण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण एइंदिएसु गदो तत्थ जाधे बंधो च णिज्जरा चेव दुसमो तस्स ताधे जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होदि। सेसचदुणाणावरण-णवदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो। सादस्स जह० वड्ढी कस्स? जो जहण्णेण संतकम्मेण कसाए

अणुवसामेदूण (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ता प्रतिषु 'उवसामेदूण' इति पाठः।) संजमासंजम-संजमगुणसेडीहि बहुक्खुत्तो (का प्रतौ 'चदुक्खुत्तो' इति पाठः।) कम्मं खवेदूण एइंदिएसु गदो, तत्थ सव्वचिरं कालं जोगजवमज्झस्स हेट्ठा बंधिदूण सव्वमहंतीयो असादबंधगद्धाओ कादूण तदो जं तं सव्वचिरं कालं जोगजवमज्झस्स हेट्ठा बंधिदाओ तस्स कालस्स पज्जवसाणबंधगद्धाए तिस्से अपच्छिमाए सादबंधगद्धाए समऊणाए आवलियासेसाए णिज्जरादो किंचि विसेसुत्तरो बंधो जादो, तदो जाधे असाधबंधो तदो बिदियसमए जहण्णिया वड्ढी सादस्स। जिस्से असादबंधाए जह० वड्ढी णिप्फण्णा तं चेव असादस्स बंधद्धं दीहं बंधिऊण तिस्से चरिमसमए जह० हाणी सादस्स अवट्ठाणं णेव अत्थि। जहा सादस्स तहा असादस्स। णवरि चदुक्खुत्तो कसाया उवसामेयव्वा। जाओ जं सादं जहण्णं कुणमाणेण असादबंधगद्धाओ कदाओ, ताओ चेव असादस्स जहण्णं कुणमाणेण सादबंधगद्धाओ कायव्वाओ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा कर एकेन्द्रियोंमें गया है उसके वहाँ जब बन्ध और निर्जरा दोनों समान होते हैं तब उसकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है। शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। सातावेदनीयकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ कषायोंको न उपशमाकर संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियों द्वारा बहुत वार कर्मका क्षय कर एकेन्द्रियोंमें गया है और वहाँपर सबसे दीर्घ कालतक योगयवमध्यके नीचे बाँधकर सबसे बड़े असातबन्धकालोंको करके पश्चात् जिस सर्वचिर कालके द्वारा योगयवमध्यके नीचे बन्ध

किया है उस कालके अन्तिम बन्धककालमें उस अन्तिम सातबन्धककालमें एक समय कम आवलीके शेष रहनेपर निर्जराकी अपेक्षा बन्ध कुछ विशेष अधिक हो जाता है, तत्पश्चात् जब असाताका बन्ध होता है तब उसके द्वितीय समयमें सातावेदनीयकी जघन्य वृद्धि होती है। जिस असाताबन्धकालमें जघन्य वृद्धि उत्पन्न हुई है उसी दीर्घ असाताबन्धककालमें बाँधकर उसके अन्तिम समयमें सातावेदनीयकी जघन्य हानि होती है। सातावेदनीयका अवस्थान नहीं है। जैसे सातावेदनीयकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही असातावेदनीयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि चार वार कषायोंकी उपशामना चाहिए। इसके अतिरिक्त सातावेदनीयको जघन्य करनेवाले जीवके द्वारा जो असाताबन्धककाल किये गये हैं वे ही असातावेदनीयको जघन्य करनेवालेके द्वारा साताबन्धककाल कराने चाहिये।

मिच्छत्तस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स? जस्स तप्पाओग्गजहण्णमिच्छत्तसंतकम्मस्स अवट्ठाणं होज्ज तस्स मिच्छत्तस्स जह० वड्ढी हाणी वा अवट्ठाणं वा होज्ज। सम्मत्तस्स जह० वड्ढी कस्स? जो जहण्णएण कम्मेण सम्मत्तं लहिदूण बे-छावट्ठीयो अणुपालिदूण पडिवदिदो, सव्वमहंतेण उव्वेलणकालेण उव्वेल्लमाणस्स अपच्छिमस्स ट्ठिदिखंडयस्स पढमसमए जहण्णिया वड्ढी। दुचरिमट्ठिदिखंडयस्स चरिमसमए जहण्णिया हाणी। अवट्ठाणं णेव अत्थि। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तभंगो।

मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? तत्प्रायोग्य जघन्य मिथ्यात्व सत्कर्मयुक्त जिस जीवके अवस्थानसंक्रम होता है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता

है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ सम्यक्त्वको प्राप्त कर व उसका दो छ्यासठ सागरोपम काल तक पालन करके च्युत होता हुआ सबसे महान उद्वेलनकालके द्वारा उद्वेलना कर रहा है उसके अन्तिम स्थितिकाण्डकके प्रथम समयमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है। द्विचरम स्थितिकाण्डकके अन्तिम समयमें उसकी जघन्य हानि होती है। अवस्थान नहीं है। सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा सम्यक्त्वके समान है।

अणंताणुबंधीणं जहण्णिया वड्ढी कस्स? अभवसिद्धियपाओग्गेण जहण्णेण कम्मेण जो आगदो संजमासंजम-संजमगुणसेढीहि कम्मं खवेदूण कसाए अणुवसामेदूण एइंदिएसु गदो, तस्स जम्हि योगासेसकम्मस्स (?) अवट्ठाणं होदि तम्हि जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं (वा) होज्ज। एसो ताव एक्को उवदेसो। अण्णेण उवएसेण अणंताणुबंधीणं जह० हाणी कस्स? जो जहण्णएण कम्मेण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेऊण तदो संजोएदूण बे-छावट्ठियो सम्मत्तमणुपालिय अणंताणुबंधीणं विसंजोयणाए उवट्ठिदो तस्स अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए जहण्णिया हाणी। एरिसो चेव बे-छावट्ठीयो अणुपालेदूण मिच्छत्तं गदो तस्स पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स जह० वड्ढी। अवट्ठाणं णत्थि। एसो बिदियो उवदेसो।

अनन्तानुबन्धी कषायोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य कर्मके साथ आकर संयमासंयम व संयम गुणश्रेणियोंके द्वारा कर्मका क्षय कर तथा कषायोंको न उपशमा कर एकेन्द्रियोंमें गया है उसके जिस जघन्य योगमें सत्कर्मका

अवस्थान होता है उसमें उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है। यह एक उपदेश है। दूसरे उपदेशके अनुसार अनन्तानुबन्धी कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा कर फिर संयोजन कर दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन करके अनन्तानुबन्धी कषायोंकी विसंयोजनामें उद्यत होता है उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें उनकी जघन्य हानि होती है। ऐसा ही जो जीव दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि के उनकी जघन्य वृद्धि होती है। अवस्थान उनका नहीं है। यह दूसरा उपदेश है।

बारसण्णं कसायाणं जेण उवएसेण अवट्ठाणमत्थि तेण उवदेसेण उच्चदे -- जहण्णियाणि संतकम्माणि काऊण एइंदियं गदस्स जम्हि जहण्णयस्स संतकम्मस्स अवट्ठाणं होदि तम्हि जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होज्ज। एवं भय-दुगुंछा-पुरिसवेदाणं। हस्स-रदि-सोगाणं जहण्णवड्ढि-हाणीयो जहा सादासादाणं कदाओ तहा कायव्वाओ।

जिस उपदेशके अनुसार उपदेश है उस उपदेशके अनुसार बारह कषायोंकी प्ररूपणा करते हैं -- जघन्य सत्कर्मोको करके एकेन्द्रिय भवको प्राप्त हुए जीवके जहाँपर जघन्य सत्कर्मका अवस्थान होता है वहाँ उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है। इसी प्रकार भय, जुगुप्सा और पुरुषवेदकी प्ररूपणा करना चाहिये। हास्य, रति, अरति

और शोककी जघन्य वृद्धि और हानि जैसे साता व असता वेदनीयकी की गई है वैसे करनी चाहिये।

इत्थिवेदस्स जहण्णिया हाणी कस्स? जो जहण्णएण कम्मेण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेयूण बे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण से काले मिच्छत्तं गाहदि त्ति तस्स जहण्णिया हाणी। तस्स चेव से काले पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स जहण्णिया वड्ढी। अवट्ठाणं चेव अत्थि। णवुंसयवेदस्स इत्थिवेदभंगो। णवरि पुव्वमेव तिण्णि पलिदोवमाणि तिपलिदोवमेसु अच्छिय तदो पच्छा बे-छावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालेदव्वो।

स्त्रीवेदकी जघन्य हानि किसके होती है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा कर व दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला है उसके उसकी जघन्य हानि होती है। अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुए उसी प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। अवस्थान नहीं है। नपुंसकवेदकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है। विशेष इतना है कि पहले ही तीन पल्योपमकाल प्रमाण आयुवाले जीवोंमें रहकर पीछे दो छ्यासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कराना चाहिये।

णिरयगइणामाए जह० हाणी कस्स? एइंदियकम्मेण जहण्णएण णिरयगइणाममंतोमुहुत्तं संजोएदूण तदो बावीससागरोवमट्ठिदिणिरयं गदो, बावीससागरोवमाणं अंतोमुहुत्ते सेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, मदो मणुसो जादो, एक्कत्तीससागरोवमट्ठिदिं देवगदिं गदो, अंतोमुहुत्तं उववण्णो मिच्छत्तं गदो, एक्कत्तीससागरोवमेसु अंतोमुहुत्ते सेसेसु (का प्रतौ 'अंतोमुहुत्तेसु सेसेसु', ता प्रतौ 'अंतोमुहुत्तसेसेसु' इति पाठः।) सम्मत्तं पडिवण्णो, बे-छावट्टीयो अणुपालेदूण सोधम्मकप्पम्हि मिच्छत्तं गदो तदो संतो एइंदिए गदो, तदो सव्वमहंतेण उव्वेलणकालेण उव्वेल्लमाणस्स दुचरिमउव्वेल्लणखंडयस्स चरिमसमए जहण्णिया हाणी। तस्सेव से काले जह० वड्ढी।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि किसके होती है? जो जघन्य एकेन्द्रिय योग्य कर्मके साथ अन्तर्मुहूर्त काल तक नरकगति नामकर्मका संयोजन करके पश्चात् बाईस सागरोपम आयुवाले नरकको प्राप्त हुआ है, बाईस सागरोपमोंमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त होकर मरा व मनुष्य हुआ है, पश्चात् इकत्तीस सागरोपम स्थितिवाली देवगतिको प्राप्त होकर उत्पन्न होनेके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, फिर इकत्तीस सागरोपमोंमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सौधर्म कल्पमें मिथ्यात्वको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रियमें गया है, और तत्पश्चात् जो सबसे महान उद्वेलनकाल द्वारा उद्वेलना कर रहा है; उसके द्विचरम उद्वेलनकाण्डके अन्तिम समयमें नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है।

मणुसगइणामाए जह० वड्ढी कस्स? जो एइंदियकम्मेण वस्सपुधत्तेण अणुत्तरवेमाणिएसु देवेसु उववण्णो, तस्स तप्पाओग्गजहण्णसंतकम्मस्स जम्हि अवट्ठाणं होदि तम्हि जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होदि। देवगइणामाए जहण्णवड्ढि (अ-का प्रत्योः 'णामाए दीहणवड्ढी', ता प्रतौ 'णामाए वड्ढि' इति पाठः।) हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स? (जो) एइंदियकम्मेण तिपलिदोवमिएसु उववण्णो तस्स जाधे तप्पाओग्गजहण्णएण कम्मेण अवट्ठाणं होज्ज तम्हि जह० वड्ढी अवट्ठाणं वा। तिरिक्खगइणामाए जहण्णिया हाणी कस्स? जो जहण्णएण कम्मेण तिपलिदोवमिएसु उववण्णो, अंतोमुहुत्ते सेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, तदो देवेसु पलिदोवमपुधत्ताउट्ठिदिएसु उववण्णो, अपडिवदिदेण सम्मत्तेण मणुस्सेसु गदो, तदो अपडिवदिदेण एक्कत्तीससागरोवमिएसु देवेसु उववण्णो, अंतोमुहुत्तमुववण्णो मिच्छत्तं गदो, अंतोमुहुत्तावसेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, बे-छावट्ठीयो (ता प्रतौ 'पडिवण्णो, (मि) बे छावट्ठीयो' इति पाठः।) अणुपालेदूण जाधे चरिमसमयसम्माइट्ठी ताधे जहण्णिया हाणी। तस्सेव से काले जहण्णिया वड्ढी। तिरिक्खगइणामाए अवट्ठाणं णेव अत्थि। बे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालिय तदो खवणाए, अहिमुहचरिमसमयअधापवत्तकरणं मोत्तूण जहण्णिया हाणी केण (ता प्रतौ 'हाणी। केण' इति पाठः।) कारणेण चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स कीरदि त्ति वुच्चदे -- बे छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण जो तत्तो खवेदि तस्स उक्कस्सिया सम्मत्तद्धा थोवा, बे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण जो मिच्छत्तं गच्छदि तस्स सम्मत्तद्धा विसेसाहिया। एदेण कारणेण चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स जहण्णिया तिरिक्खगइणामाए हाणी कदा, चरिमसमयअधापवत्तकरणे ण (ता प्रतौ 'करणेण' इति पाठः।) कदा।

मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जो एकेन्द्रिय योग्य कर्मके साथ वर्षपृथक्त्वमें अनुत्तर विमानवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तत्प्रायोग्य जघन्य सत्कर्मका जहाँ अवस्थान होता है वहाँ उसकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है। देवगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होता है? जो एकेन्द्रिय योग्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ है उसके जब तत्प्रायोग्य जघन्य सत्कर्मके साथ अवस्थान होता है तब उसकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी जघन्य हानि किसके होती है। जो जघन्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवालोंमें उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् पल्योपमपृथक्त्व आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, पुनः अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें गया है, तत्पश्चात् अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, वहाँ उत्पन्न होनेके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर पुनः सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, तथा जो दो छ्यासठ सागरोपम काल तक उसका पालन कर जब अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि होता है तब उसके तिर्यग्गति नामकर्मकी जघन्य हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है। तिर्यग्गति नामकर्मका अवस्थान नहीं है।

शंका -- दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर तत्पश्चात् क्षपणाके अभिमुख अन्तिम समयवर्ती अधःप्रवृत्तकरणको छोड़कर अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि के किस कारणसे उसकी जघन्य हानि की जाती है?

समाधान -- दो छ्यासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर पश्चात् जो क्षपणा करता है उसका उत्कृष्ट सम्यक्त्वकाल स्तोक होता है, परन्तु दो छ्यासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कर पश्चात् जो मिथ्यात्वको प्राप्त होता है उसका सम्यक्त्वकाल विशेष अधिक होता है। इस कारण अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि के तिर्यग्गति नामकर्मकी जघन्य हानि की गयी है और अन्तिम समयवर्ती अधःप्रवृत्तकरणके वह नहीं की गयी है।

सव्वेसिं धुवबंधियाणं णामाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स? तप्पाओग्गजहण्णाणि कम्माणि कादूण जम्हि अवट्ठाणं कम्मस्स होज्ज तम्हि वड्ढि हाणी अवट्ठाणं वा जहण्णयं होदि। वेउव्वियसरीर-पढमसंठाण-पढमसंघडण-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-आदेज्ज-सुस्सरणामाणं जहण्णिया वड्ढी कस्स? जत्थ एदेसिं कम्माणं तप्पाओग्गजहण्णाणं जहण्णमवट्ठाणं होज्ज तत्थ जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होज्ज। अप्पसत्थविहायगइ-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-दूभग-अणादेज्ज-दुस्सराणं णवुंसय-वेदभंगो। णीचागोदस्स वि णवुंसयवेदभंगो। उच्चागोदस्स मणुसगइभंगो। एवं जहण्णसामित्तं समत्तं।

सब ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंकी नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं। तत्प्रायोग्य जघन्य कर्मोंको करके जहाँपर कर्मका अवस्थान होता है वहाँपर उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होते हैं। वैक्रियिक शरीर, प्रथम संस्थान, प्रथम संहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय

और सुस्वर नामकर्मोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? जहाँपर इन तत्प्रायोग्य जघन्य कर्मोंका जघन्य अवस्थान होता है वहाँपर उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होता है। अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, दुर्भग, अनादेय और दुस्वर प्रकृतियोंकी प्ररूपणा नपुंसकवेदके समान है। नीचगोत्रकी भी प्ररूपणा नपुंसकवेदके समान है। उच्चगोत्रकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ।

अप्पाबहुअं। तं जहा -- मदिआवरणस्स उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी विसेसाहिया, भिण्णसामित्तादो। हाणी असंखेज्जगुणा। सेसचदुणाणावरण-चदुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो। णिद्दा-पयलाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखेज्जगुणा। वड्ढी असंखेज्जगुणा। थीणगिद्धितियस्स णिद्दाभंगो। सादस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा। वड्ढी विसेसाहिया। असादस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा।

अल्पबहुत्व का कथन करते हैं। वह इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि विशेष अधिक है, क्योंकि, उसका स्वामी भिन्न है। हानि असंख्यातगुणी है। शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। स्त्यानगृद्धि आदि तीनकी प्ररूपणा निद्राके समान है। सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि विशेष अधिक है। असाताकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है।

मिच्छत्तस्स उक्कस्समवट्ठाणं (थोवं)। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी थोवा, उव्वेल्लणकंडयचरिमसमए जादत्तादो। उक्क० हाणी असंखे० गुणा, दुसमयमिच्छाइट्ठिस्स जादत्तादो। अवट्ठाणं णत्थि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। अणंताणुबंधीणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। अट्ठण्णं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। तिण्णं संजलणाणं पुरिसवेदाणं य उक्क० वड्ढी थोवा। उक्क० हाणी अवट्ठाणं च विसेसाहियं। लोभसंजलणाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखेज्ज० गुणा। वड्ढी विसेसा०। छण्णं णोकसायाणमुक्क० हाणी थोवा। वड्ढी असंखेज्ज० गुणा। अवट्ठाणं णत्थि। इत्थि-णवुंसयवेदाणं हस्स-रदिभंगो।

मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है, क्योंकि, वह उद्वेलनकाण्डकके अन्तिम समयमें होती है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है, क्योंकि, वह द्वितीय समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है। अवस्थान नहीं है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। अनन्तानुबन्धी कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। तीन संज्वलन कषायों और पुरुषवेदकी वृद्धि स्तोक है। उत्कृष्ट हानि और अवस्थान विशेष अधिक है। संज्वलन लोभका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि

असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। अवस्थान नहीं है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा हास्य और रतिके समान है।

णिरयगइणामाए उक्क० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। एवं तिरिक्खगइणामाए। दोण्णमवट्ठाणं णत्थि। मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। देवगइणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। जहा देवगइणामाए तहा जादिणाम-आणुपुव्वीणामाणं च। ओरालियसरीरणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो। आहारसरीरणामाए उक्क० हाणी थोवा। वड्ढी विसेसा०। तेजा-कम्मइयसरीराणं सव्वासिं चेव धुवबंधिणामाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी विसेसा०। वज्जरिसहणारायणसंघडणणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। समचउरससंठाण-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभगादेज्ज-सुस्सराणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी विसेसा०। पंचसंठाण-पंचसंघडण-अथिर-अजसकित्ति-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अप्पसत्थविहायगदीणं उक्क० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। अवट्ठाणं णत्थि। अप्पसत्थाणं धुवबंधीणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गणामाणं आदावुज्जोवाणं च उक्क० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। इसी प्रकार तिर्यंचगति नामकर्मकी प्ररूपणा है। अवस्थान दोनोंका नहीं है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। जैसे देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही जाति नामकर्मों और दो आनुपूर्वी नामकर्मोंकी भी करना चाहिये। औदारिकशरीर नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीर व उसके अंगोपांग, बन्धन एवं संघात नामकर्मकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि विशेष अधिक है। तैजस व कार्मण शरीरों तथा सब ही ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। वज्रर्षभनाराचसंहनन नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। समचतुरस्र संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुस्वर इनका उत्कृष्ट स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। पाँच संस्थान, पाँच संहनन, अस्थिर, अयशकीर्ति, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अप्रशस्त विहायोगति; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। अवस्थान नहीं है। अप्रशस्त ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। नरकगति और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मों तथा आतप और उद्योत नामकर्मोंकी भी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है।

णीचागोदस्स गुणसंकमेण उक्क० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। उच्चागोदस्स उक्क० हाणी सत्तमाए पुढवीए पढमणेरइयस्स हाणी (ता प्रतौ '(हाणी)' इति पाठः।) थोवा। तस्स चेव उवट्टियस्स (प्रतिषु 'उवट्टियस्स' इति पाठः।) पढमसमयतिरिक्खस्स णीचागोदस्स बंधमाणयस्स उक्क० वड्ढी विसे०, णेरइयस्स सम्माइट्ठीसु संचिदत्तादो। उच्च-णीचाणमवट्ठाणं णत्थि। एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं।

नीचगोत्रकी गुणसंक्रमके द्वारा उत्कृष्ट हानि स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट हानि सातवीं पृथिवीके प्रथम समयवर्ती नारकीके होती है, जो स्तोक है। वहाँसे निकलकर नीचगोत्रको बाँधनेवाले उसी प्रथम समयवर्ती तिर्यचके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है, जो हानिसे विशेष अधिक है; क्योंकि, वह नारक सम्यग्दृष्टियोंमें संचित है। उच्च और नीच गोत्रोंका अवस्थान नहीं है। इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

णाणावरणपंचयस्स जहण्णवड्ढी हाणी अवट्ठाणं सरिसं। णवदंसणावरण-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-पंचंतराइयाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि। सादस्स जह० हाणी थोवा। वड्ढी विसेसाहिया। अवट्ठाणं णत्थि। असादस्स सादभंगो। सम्मत्तस्स जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। सम्मामिच्छ० सम्मत्तभंगो।

हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं जह० हाणी थोवा। वड्ढी विसेसा०। अवट्ठाणं णत्थि। इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। अवट्ठाणं णत्थि।

पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान सदृश हैं। नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं। सातावेदनीयकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि विशेष अधिक है। अवस्थान नहीं है। असातावेदनीयके प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है और वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा सम्यक्त्व प्रकृतिके समान है। हास्य, रति, अरति और शोक इनकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि उससे विशेष अधिक है। अवस्थान नहीं है। स्त्री और नपुंसक वेदोंकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है। अवस्थान नहीं है।

णिरयगइणामाए जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। तिरिक्खगइणामाए जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। मणुसगइणामाए जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तुल्लं। एवं देवगदीए। ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-तप्पाओग्गबंधण-संघाद-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तुल्लं।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य हानि स्तोक और वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है। मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों समान है। इसी प्रकार देवगतिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये। औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, उनके योग्य बन्धन, संघात व अंगोपांग, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण; इन नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों तुल्य हैं।

णीचागोदस्स जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। अवट्ठाणं णत्थि। उच्चागोदस्स जह० हाणी थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। अवट्ठाणं णत्थि। एवं पदेससंकमो (अ-का प्रत्योः 'पदेससंकमो' इति पाठः।) पदणिक्खेवो समत्तो।

नीचगोत्रकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है। अवस्थान नहीं है। उच्चगोत्रकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है। अवस्थान नहीं है। इस प्रकार प्रदेशसंक्रममें पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

पदेससंकमो वड्ढिसंकमो कायव्वो। तं जहा -- मदिणाणआवरणस्स अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। सेसपदाणि णत्थि। सेसचदुणाणावरणीय-

चक्खुदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो। णिद्दापयलाणं अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-हाणि-असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। थीणगिद्धितियस्स अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागहाणी। संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीयो वि अत्थि, मिच्छत्तं गदसम्माइट्ठिम्मि थीणगिद्धितियसंतादो अण्णपयडीहिंतो (ता प्रतौ 'संतादो। अण्णपयडीहिंतो' इति पाठः।) आगयदव्वस्स-संखेज्जभाग-गुणब्भहियस्स वि उवलंभादो। अत्थि असंखे० गुणवड्ढि-हाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा।

प्रदेशसंक्रममें वृद्धिसंक्रमका कथन करते हैं। यथा -- मतिज्ञानावरणके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थान और अवक्तव्य ये चार संक्रमपद हैं। शेष पद नहीं हैं। शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाँच अन्तराय कर्मोकी प्ररूपणा मतिज्ञ ाानावरणके समान है। निद्रा और प्रचलाके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य ये संक्रमपद हैं। स्त्यानगृद्धित्रिकके असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि संक्रम हैं। संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धि पद भी हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टिमें स्त्यानगृद्धि आदि तीनोंके सत्त्वकी अपेक्षा अन्य प्रकृतियोंसे आया हुआ द्रव्य संख्यातभाग अधिक व संख्यातगुणा अधिक भी पाया जाता है। उनके असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं।

सादस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-अवत्तव्वसंकमा। सेसाणि पदाणि णत्थि। असादस्स असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढी-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा अत्थि। सेसपदाणि (अ प्रतौ 'विसेसपदाणि', का प्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः, ता प्रतौ '(वि) सेसपदाणि' इति पाठः।) णत्थि। मिच्छत्तस्स असंखे० भागवड्ढि-हाणि-असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि -अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा अत्थि। सेसाणि पदाणि णत्थि। सम्मामिच्छत्तस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढि-हाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा। सेसाणि पदाणि णत्थि। सम्मत्तस्स असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-हाणि -अवत्तव्वसंकमा अत्थि। सेसपदाणि णत्थि।

सातावेदनीयके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि और अवक्तव्य संक्रम है। शेष पद नहीं हैं। असातावेदनीयके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं। उसके शेष पद नहीं हैं। मिथ्यात्वके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं। शेष पद नहीं हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं। शेष पद नहीं हैं। सम्यक्त्व प्रकृतिके असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं। शेष पद नहीं हैं।

अणंताणुबंधीणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा (ता प्रतौ 'अवत्तव्व-अवट्ठाणसंकमा' इति पाठः।) । सेसाणि पदाणि णत्थि। अट्ठण्णं कसायाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे०गुणवड्ढि-असंखे गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। सेसपदाणि णत्थि। तिण्णं संजलणाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे० भागहाणि-संखे० गुणवड्ढि-संखे० गुणहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। लोभसंजलणाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। सेसाणि पदाणि णत्थि।

अनन्तानुबन्धी क्रोधादिकोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं। शेष पद नहीं हैं। आठ कषायोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं। शेष पद नहीं हैं। तीन संज्वलन कषायोंके असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणवृद्धि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रमपद हैं। संज्वलन लोभके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम पद हैं। शेष पद नहीं हैं।

हस्स-रदि-सोगाणं असादभंगो। पुरिसवेदस्स कोधसंजलणभंगो। इत्थि-णवुंसयवेदाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा। सेसपदाणि णत्थि। भय-दुगुंछाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। सेसपदाणि णत्थि (क. पा. सु. पृ. ४५६, ६२५-३१.) ।

हास्य, रति, अरति और शोककी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। पुरुषवेदकी प्ररूपणा संज्वलन क्रोधके समान है। स्त्री और नपुंसक वेदोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, अंसख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं। शेष पद नहीं हैं। भय और जुगुप्साके असंख्यातभागवृद्धि,असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रमपद हैं। शेष पद नहीं हैं।

णिरयगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि -असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा। तिरिक्खगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० भागहाणि असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा। मणुसगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंकमा। सेसपदाणि णत्थि। देवगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-

असंखे० भागहाणि-संखे० गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा। सेसं जाणिदूण वत्तव्वं। एवं संकमे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

नरकगति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं। तिर्यग्गति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं। शेष पद नहीं हैं। देवगति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि,संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रामपद हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिये। इस प्रकार संक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

*****